Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 25.12. 2015 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अल्लाह तआला की तक़दीर पूरे हुए बिना नहीं रहती तथा दुश्मनों की द्वेष पूर्ण निगाहों के बावजूद वह अपनी जमाअत को बढ़ाता चला जाता है तथा उसे दुनया में उन्नित देता चला जाता है। निःसन्देह यह बात हमारे लिए बड़ी प्रसन्नता का कारण है परन्तु साथ ही हमें अपने कर्त्तव्यों की ओर भी ध्यान दिलाती है हमें उन उद्देश्यों की ओर ध्यान दिलाती है जिसके लिए हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुजूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

ये दिन क़ादियान में जलसा सालाना के दिन हैं, कल से इन्शाअल्लाह क़ादियान का जलसा सालाना शुरु हो रहा है। क़ादियान के जलसा सालाना की विशेष रूप से इस लिए भी महत्ता है कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बस्ती में हो रहा है और यहीं आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के आदेशानुसार जलसे आरम्भ कराए थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने अपने विभिन्न ख़ुत्बों एंव सम्बोधनों में जलसा सालाना के द्वारा हमें उस ज़माने से भी अवगत कराया है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना था और जमाअत बनना आरम्भ हुआ था। उस समय मैं इस संदर्भ में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के कुछ वृत्तांत पेश करता हूँ। आरम्भिक जलसों में से एक का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद अपने बचपन के अनुभव तथा जमाअत के स्थिति का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं। यह 1936 की बात है जब मेरी आयु सात आठ वर्ष की होगी। मुझे इतना याद है कि मैं वहाँ एकत्र होने वाले लोगों के आस पास दौड़ता और खेलता फिरता था। मेरे उस ज़माने में यह एक आश्चर्य पूर्ण बात थी कि कुछ लोग एकत्र हैं। इस फ़सील पर एक दरी बिछी हुई थी जिसपर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बैठे हुए थे तथा आस पास दोस्त थे जो जलसा सालाना के इज्तिमा के नाम पर एकत्र थे। डेढ़ सौ होंगे अथवा दो सौ तथा बच्चे मिलाकर उनकी सूचि ढाई सौ की संज्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी प्रकाशित की थी। मुझे याद है दो तीन बार उस दरी का स्थान बदला गया। आज जो लोग क़ादियान में जलसे के उद्देश्य से गए हुए हैं सम्भवतः वे उस समय की स्थितियों का अनुमान न कर सकते हों। अब तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से एक विशाल जलसागाह की व्यवस्था है जिसको पक्की चार दीवारी से घेरा गया है तथा उसमें भी प्रयास यह है अधिक से अधिक सुविधाएँ हों। 1936 ई. में जब हज़रत मुस्लेह मौऊद यह फ़रमा रहे हैं, इसके पश्चात और अधिक विशाल प्रबन्ध होते चले गए देश विभाजन तक। क़ादियान पर बाद में ऐसा दौर भी आया पार्टिशन के समय जब केवल दारुल-मसीह तथा आस पास के कुछ घरों तक ही अहमदी सीमित रह गए बल्कि कुछ सौ के अतिरिक्त सबको हिजरत करनी पड़ी और अहमदी यह जो थे केवल कुछ ही, वे भी बड़े दुर्बल थे। परन्तु आज फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से क़ादियान में विस्तार हो रहा है। इतिहास के द्वारा आंकलन करें तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की बारिश नज़र आती है। आज रबवा के रहने वाले भी इन दिनो व्याकुल होंगे तो उन्हें भी याद रखना चाहिए कि प्रस्थितियाँ सदैव एक ही प्रकार की नहीं रहतीं। इन्शाअल्लाह तआला वहाँ भी प्रस्थितियाँ बदलेंगी और हर्ष की लहर आएगी परन्तु रबवा के रहने वालों को दुआओं की ओर ध्यान देना होगा, पाकिस्तान में रहने वालों को दुआओं की ओर ध्यान देना होगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है وَلَا تَهِنُوۡا وَلَا تَحۡزَنُوۡا وَاَنۡتُمُ الۡاَعۡلَوۡنَ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ कि कमज़ोरी न दिखाओ और शोक न करो निःसन्देह तुम ही अवश्य विजय पाने वाले हो, जब कि तुम मोमिन हो। प्रतिबन्ध यह लगाया कि जबकि तुम मोमिन हो।

अतः ईमान में वृद्धि तथा दुआओं पर ज़ोर, अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण करके, हालात फिर बदलते हैं। कहते हैं इस एक अरब और पच्चीस तीस करोड़ आदमियों की दुनया में (उस ज़माने में जो जनसंज्या थी) दो ढाई सौ आदमी एकत्र हुए थे इस भावना तथा इस विचार से कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का झंडा जिसे दुश्मन नीचा करने का प्रयास कर

रहा है वे इस झंडे को नीचा नहीं होने देंगे बल्कि उसे पकड़ कर सीधा रक्खेंगे और अपने आपको नष्ट कर लेंगे और उसे नीचा नहीं होने देंगे। उस एक अरब पच्चीस करोड़ लोगों के समुद्र की तुलना में दौ ढाई सौ दुर्बल लोग अपनी क़ुरबानी पेश करने के लिए आए थे। 1895-96 ई. में जिनके चेहरों पर वही कुछ लिक्ज़ा हुआ था जो बद्री सहाबा के चेहरों पर लिक्खा हुआ था। जैसा कि बद्र के सहाबा ने मुहज़्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमह से कहा कि या रसूलुल्लाह, निःसन्देह हम कमज़ोर हैं और शत्रु बलवान है परन्तु वह आप तक नहीं पहुंच सकता जबतक हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे उनके चेहरे बता रहे थे कि वे इंसान नहीं बल्कि ज़िन्दा मौतें हैं जो अपने अस्तित्व के द्वारा मुहज़्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सज़्मान तथा आपके दीन की स्थापना हेतु एक अन्तिम संघर्ष करने के लिए एकत्र हुए थे देखने वाले उन पर हंसते थे, देखने वाले उनका उपहास करते थे और चकित थे कि ये लोग क्या काम करेंगे। वास्तव में क्या बात है, यह वह इश्क़ है जो इंसान की बुद्धि पर पर्दा डाल देता है और इंसान से ऐसी ऐसी क़ुरबानियाँ कराता है। फिर यह इश्क़ जिनके विचारों में नहीं होता, वे दौ या ढाई सौ लोग एकत्र हुए उनके दिल से निकले हुए ख़ून ने ख़ुदा तआला सिंहासन के सज़्मुख दुआ याचना की। अतः उस समय हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने अपने सामने बैठे हुए कुछ हज़ार लोगों को कहा था कि इन दो ढाई सौ लोगों की दुआओं का परिणाम तुम देख रहे हो अर्थात उस मैदान में उन लोगों की दुःख भरी याचना थी उन दो ढाई सौ लोगों की, जिसका परिणाम यह देख रहे हो तुम कि उस मैदान में तुम बैठे हुए हो, उसी मैदान में क़ादियान में। आज जैसा कि मैंने बताया कि क़ादियान की जलसागाह और भी विस्तृत हो चुकी है। मैं जलसे में शामिल होने वाले जितने भी लोग हैं, स्त्रियाँ पुरुष, उनसे कहता हूँ कि एक विशाल मैदान जिसमें समस्त सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं, एक के स्थान पर कई भाषाओं में आवाज़ें पहुंचाई जा रही हैं। जहाँ इस समय विभिन्न राष्ट्रों के लोग बैठे हैं, जहाँ पाकिस्तान से आए हुए अपने अधिकारों से वंचित लोग भी बैठे हैं। अपने आपमें ये सब लोग वह ईमान एंव निष्ठा पैदा करें और अल्लाह तआला से सज़्बंध स्थापित करें, ऐसी भावना उत्पन्न करें जो उन दो सौ लोगों में थी जिसका उदाहरण हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह ने दिया है। यदि उन दो ढाई सौ बीजों अथवा गुठलियों ने अपने प्रभाव दिखाए तो आज हमारा यह दायित्व है कि इस काम को आगे बढ़ाने के लिए अपने ईमान में बढ़ें और फिर जैसा कि अल्लाह तआला का वादा है, हमारी विजय है इन्शाअल्लाह। आज दुनया की जनसंज़्या सात अरब तीस करोड़ कहा जाता है और हमारी संज़्या अभी भी दुनया की जनसंज़्या की तुलना में तथा अपने संसाधनों की दृष्टि से बहुत कम है परन्तु हमने वही काम करने हैं जो हमारे पूर्वजों ने किए। अतः इस बात को प्रत्येक अहमदी को अपने सामने रखना चाहिए, हमारा उद्देश्य बड़ा विशाल है, उसे हमने प्राप्त करना है और ये सारे लोग जो क़ादियान में जलसे में शामिल हुए हैं उनको भी याद रखना चाहिए कि इन दिनों में बड़ी दुआएँ करें। हज़रत मुस्लेह मौऊद इस बात का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस प्रकार के निशान हज़ारों की संज़्या में हैं तथा साक्ष्य असंज़्य हैं जो अपनी छटा बिखेरते हैं। एक इलहाम का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि आपका इलहाम है कि یاتیک من کل فجٍ عمیق اور یاتون من کل فجٍ عمیق अर्थात- और दूर दूर से लोग तेरे पास आएँगे तथा दूर दूर से तेरे पास उपहार लाए जाँएगे और ऐसे ऐसे प्रबन्ध किए जाएँगे जिनके द्वारा मेहमान नवाज़ी हो और इतनी अधिक संज़्या में लोग आएँगे कि वे रास्ते घिस जाएँगे जिन रास्तों से वे आएँ। फ़रमाते हैं कि यह निशान एक महान निशान है, इस महान निशान की किस समय ख़ुदा तआला ने यह सूचना दी थी, उस अवस्था के देखने वाले अब भी मौजूद हैं। जब यह इलहाम हुआ उस समय क्या हाल था, इसके जानने वाले अब भी मौजूद हैं। कहते हैं कि मेरी आयु तो उस समय कम थी परन्तु वह दृश्य अब भी याद है, जहाँ अब मदरसा है वहाँ ढाब होती थी और गन्दगी तथा रोड़ी के ढेर थे। उससे भी पहले जबकि क़ादियान में कभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कोई व्यक्ति न जानता था, ख़ुदा तआला ने यह वादा दिया कि तेरे पास दूर दूर से लोग आएँगे और दूर दूर से उपहार लाए जाएँगे। यह बिन्दु विचार योग्य है कि आज क़ादियान के जो नज़ारे हम देखते हैं, दुनया के बीस पच्चीस देशों से वहाँ लोग पहुंचे हुए हैं तथा नए नए भवन भी अल्लाह तआला की कृपा से बन रहे हैं।

फिर जलसा सालाना की मेहमान नवाज़ी के संदर्भ में एक इलहाम का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में आख़री जलसे के विषय में कि कुल सात सौ आदमी थे और प्रबन्ध में गड़बड़ हो गई थी कि रात को तीन बजे तक खाना न मिल सका कुछ लोगों को और आपको इलहाम हुआ कि یاایھاالنبی اطعموا الجائع والمعتر अर्थात ऐ नबी, भूखे और परेशान हाल को खाना खिलाओ। अतः सुबह को पता चला कि मेहमान तीन बजे रात तक लंगर ख़ाने के सामने खड़े रहे और उनको खाना नहीं मिला। फिर आपने नए सिरे से फ़रमाया कि देगें चढ़ाओ और उनको खाना खिलाओ।

यह अल्लाह तआला की सहायता एंव समर्थन का एक महान निशान है तथा जिन जमाअतों के साथ उसकी सहायता होती है वे इस प्रकार बढ़ती चली जाती हैं और दुश्मन की निगाहों में फिर कांटों की भांति खटकने भी लग जाती हैं, दुश्मन शत्रुता में भी बढ़ते हैं, द्वेष में बढ़ते हैं परन्तु ख़ुदा तआला की तक़दीर पूरे हुए बिना नहीं रहती तथा दुश्मनों की द्वेष पूर्ण निगाहों के बावजूद वह अपनी जमाअत को बढ़ाता चला जाता है तथा उसे दुनया में उन्नित देता चला जाता है। निःसन्देह यह बात हमारे लिए बड़े हर्ष का कारण है परन्तु साथ ही हमें अपने कर्त्तव्यों की ओर भी ध्यान दिलाती है हमें उन उद्देश्यों की ओर ध्यान दिलाती है जिसके लिए हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी। और फिर यह देखें कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ही नहीं बल्कि आज दुनया के दो सौ से अधिक देशों में जमाअत बढ़ रही है तथा प्रगति कर रही है। अल्लाह तआला की तक़दीर ने जो फ़ैसला किया हुआ है उसने ग़ालिब आना है इन्शाअल्लाह तआला। जमाअत प्रगति कर रही है और इन्शाअल्लाह करती जाएगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इलहाम है जो द्विअर्थी है, हम इसका कोई विशेष अर्थ नहीं कर सकते और न हमें पता है कि वह कब तथा किस प्रकार पूरा होगा और वह इलहाम यह है ''लंगर उठा दो'' अब इस लंगर से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि लंगर का अर्थ यदि जलपोतों वाला लंगर किया जाए अर्थात जब किश्ती में लंगर डाला जाता है, पानी में खड़ा रहने के लिए तो इसका अर्थ यह होगा कि बाहर निकल जाओ तथा ख़ुदा तआला के पैग़ाम को हर जगह फैलाओ। और यदि लंगर का अर्थ प्रत्यक्ष रूप में लंगर ख़ाना किया जाए तो फिर इसका अर्थ होगा कि आने वालों की संज़्या इतनी बढ़ गई है कि अब लंगर ख़ाने का प्रबन्ध नहीं किया जा सकता इस लिए लंगर उठा दो और लोगों से कहो कि वे अपने ठहरने और अपने जलपान का स्वयं प्रबन्ध कर लें। इन दोनों अर्थों में से हम किसी अर्थ को भी निश्चित नहीं कर सकते तथा न ही समय निश्चित कर सकते हैं कि कोई भी घटना होगी। अतः जब तक मेहमानों को ठहराना इंसान की क्षमता में है उस समय तक हमें यही निर्देश है कि वस्से मकानका। अर्थात तुम अपने मकान बढ़ाते चले जाओ और मेहमानों के लिए स्थान बनाओ। इस प्रकार इसके लिए कम से कम क़ादियान में तथा जहाँ जहाँ दूसरी जमाअतें भी यह कर सकती हैं वहाँ रहने के लिए स्थाई एंव अस्थाई व्यवस्था करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम وسع مكانك के अंतर्गत अपनी व्यवस्था में भी क़ादियान में अब अल्लाह तआला की कृपा से बड़ा विस्तार हो रहा है तथा नए नए गैस्ट हाउस और अन्य स्थान बन गए हैं तथा मेहमानों के लिए जिस सीमा तक सुविधा उपलब्ध हो सकती है, व्यवस्था की जाती है परन्तु इस प्रकार भी घर जैसी सुविधा तो नहीं, इस लिए मेहमानों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि जितनी सुविधा उपलब्ध है उसके अन्दर रहते हुए ही अल्लाह तआला के प्रति आभार प्रकट करते हुए जो वास्तविक उद्देश्य है जलसे पर आने का, उसको पूरा करें और केवल मेहमान नवाज़ी अथवा रहने की सुविधाओं की ओर न देखें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक अन्य इलहाम तथा इच्छा का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इच्छा ज़ाहिर फ़रमाई कि जमाअत के वे समस्त दोस्त जिनका जलसे पर आना सम्भव हो वे एकत्र हुआ करें और अल्लाह तआला की स्तुति सुनने सुनाने में शामिल हुआ करें जो इन दिनों में यहाँ की जाती है।

आज जब हम देखते हैं तो अल्लाह तआला की कृपा से देखते हैं कि विश्व के अनेक देशों से लोग वहाँ पहुंचते हैं क़ादियान में। फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत का अधिकांश अंश इस समय हिन्दुस्तान में है और अब पाकिस्तान व भारत मिलाकर तथा इसमें से भी अधिकांश पुरुषों की जनसंज़्या है जो जलसा सालाना के अवसर पर क़ादियान पहुंच सकती है। अतः इन दिनों में क़ादियान में आना किसी ऐसे बहाने अथवा रुकावट के कारण छोड़ देना, जिसे तोड़ा जा सकता हो या जिसका निवारण किया जा सकता हो केवल एक आदेश की अवहेलना ही नहीं बल्कि अपनी संतान पर भी अत्याचार है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो आदेश है कि जलसे पर आओ केवल उसकी अवहेलना ही नहीं कर रहे बल्कि अपनी संतानों पर भी अत्याचार कर रहे होंगे। हिन्दुस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से प्रयास करके क़ादियान आना चाहिए। यदि किसी समय अमरीका में हमारी जमाअत में धनवान लोग हों तथा वे आने जाने के लिए धन ख़र्च कर सकें तो हज के अतिरिक्त उनके लिए यह बात भी आवश्यक होगी कि वे अपनी पूरी आयु में एक दो बार क़ादियान में भी जलसे के अवसर पर आएँ। क्यूँकि क़ादियान में ज्ञान वर्धक बातें उपलब्ध हैं तथा केन्द्र की बरकतों से लोग लाभान्वित होते हैं और इसके बावजूद कि अब वहाँ ख़िलाफ़त नहीं है परन्तु फिर भी वहाँ की एक आध्यात्मिक श्रेष्ठता है यदि जाएँ, तो वहाँ जाकर यह आभास होता है। आप फ़रमाते हैं कि मैं तो यह विश्वास रखता हूँ कि एक दिन आने वाला है जब दूर दूर से लोग यहाँ आएँगे। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक सपना है जिसमें आपने देखा कि आप हवा में तैर रहे हैं और फ़रमाते हैं कि ईसा तो पानी पर चलते थे और मैं हवा में तैर रहा हूँ तथा मेरे ख़ुदा की कृपा मुझ पर उनसे

बढ़कर है। यह आपने सपना देखा, इस सपने के विषय में मैं समझता हूँ कि वह ज़माना आने वाला है कि जिस प्रकार क़ादियान के जलसे पर कभी यक्के सड़कों को घिसा देते थे और फिर मोटर गाड़ियाँ चल चल कर सड़कों में गडढे डाल देती थीं तथा अब रेल गाड़ी सवारियों को खींच खींच कर क़ादियान लाती है इसी प्रकार किसी ज़माने में जलसे के दिनों में थोड़े थोड़े से ये समाचार भी मिला करेंगे कि अभी अभी अमुक देश से इतने हवाई जहाज़ आए हैं। ये बातें दुनया की दृष्टि में आश्चर्य जनक हैं परन्तु ख़ुदा तआला की दृष्टि में नहीं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अब हम ये दृश्य बड़ी मात्रा में देख हैं जैसा कि मैंने कहा, दुनया के बीस पच्चीस देशों के लोग इस समय हवाई जहाज़ों के द्वारा क़ादियान जलसे पर गए हुए हैं तथा कुछ ऐसे देशों के स्थानीय लोग हैं जिनके विषय में सोचना भी कठिन है कि वे वहाँ पहुंचेंगे और इसकी भी सम्भावना है कि किसी समय चार्टर्ड फ़्लाइट्स चला करें और क़ादियान के जलसे में लोग शामिल हुआ करें। आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला का यह फ़ैसला है कि वह अपने दीन के लिए मक्का और मदीना के बाद क़ादियान को केन्द्र बनाना चाहता है। मक्का और मदीना वे दो स्थान हैं जिनके साथ रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात का सम्बंध है। आप इस्लाम के संस्थापक और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आक़ा और गुरू हैं इसके अनुसार इन दोनों स्थानों को क़ादियान पर प्राथ्मिकता प्राप्त है परन्तु मक्का और मदीना के बाद जिस स्थान को अल्लाह तआला ने दुनया के मार्ग दर्शन का स्थान घोषित किया है, वह वही है जो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छवि अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का है और जो इस समय दीन की तबलीग़ का एक मात्र केन्द्र है। मुझे खेद से कहना पड़ता है कि आजकल मक्का और मदीना जो किसी समय बरकत वाले स्थान होने के अतिरिक्त तबलीग़ के केन्द्र भी थे, आज वहाँ के रहने वाले इस कर्त्तव्य को भुलाए हुए हैं परन्तु यह स्थिति सदैव नहीं रहेगी, इन्शाअल्लाह। मुझे विश्वास है कि जब अल्लाह तआला इन क्षेत्रों में अर्थात अरब देशों में अहमदियत को स्थापित करेगा तो फिर ये पवित्र स्थान मक्का और मदीन जी अपनी वास्तविक शान एंव वैभव की ओर लौट जाएँगे।

एक उपदेश है जो बड़ा विचार शील है जलसे पर शामिल होने वालों के लिए, क़ादियान में लोग बैठे सुन रहे हैं तथा अन्य स्थानों पर भी सुन रहे हैं। जहाँ फूल पाए जाते हैं वहाँ कांटे भी होते हैं। इस प्रकार प्रगति के साथ द्वेष और बुलन्दी के साथ गिरावट जी लगी हुई है अर्थात प्रत्येक वस्तु जो अच्छी एंव श्रेष्ट होती है उसको प्राप्त करने के मार्ग में कुछ विरोधी शक्तियाँ भी हुआ करती हैं तो उन पर ऐसी ऐसी परीक्षाएँ आती हैं कि कमज़ोर एंव कच्चे ईमानों वाले लोग पलट जाते हैं तथा कभी छोटी छोटी कठिनाईयाँ पेश आती हैं परन्तु कुछ दुर्बल ईमान वाले उनसे भी ठोकर खा जाते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ादियान पर जलसे के अवसर पर आने वालों को मैं नसीहत करता हूँ कि सामूहिक अधिकता तथा काम करने वालों की कमी के कारण यदि आपको कोई असुविधा हो तो परेशान न हो जाएँ, ठोकर न खा जाएँ। इस उपदेश को सदैव याद रखना चाहिए चाहे यहाँ जलसा हो या किसी अन्य स्थान पर हो रहे हों।

अतः मेहमान नवाज़ी करने वाले अपना भरसक प्रयास करते हैं कि हर प्रकार से आतिथ्य किया जाए परन्तु फिर भी कमियाँ रह जाती हैं तो जैसा कि मैंने कहा कि आज भी क़ादियान आने वाले अथवा कहीं भी जलसे पर जाने वाले याद रक्खें कि व्यवस्था की दृष्टि से यदि कुछ असुविधा हो तो प्रसन्नता पूर्वक सहन कर लें तथा इसको अपने ईमान में ठोकर का कारण न बनाएँ। अल्लाह तआला क़ादियान का जलसा भी तथा अन्य जलसों के भी ये दिन अपनी बरकतों एंव कृपाओं के साए में गुज़ारे और इनका समापन फ़रमाए तथा प्रत्येक जलसा अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और बरकतों को समेटने वाला हो तथा सभी सज्मिलित होने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं के वारिस भी बनें तथा स्वयं भी इन दिनों में बहुत दुआएँ करें।